International Journal of Information Movement *Vol. 10 Issue III* *July 2025)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 44-50**

पुस्तकालयों में डिजिटल परिवर्तन : अवसर, चुनौतियाँ और आगे की राह

कु० शालू
पीएच०डी.छात्रा,
पुस्तकालय विज्ञान विभाग, ग्लोकल स्कूल ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस
ग्लोकल यूनिवर्सिटी,सहारनपुर ऊ०प्र०
ई०मेल०- kmshalugkp@gmail.com

डॉ बसवराज एम. टी.
शोधनिर्देशक
एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ़ ग्लोकल स्कूल ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस
ग्लोकल यूनिवर्सिटी,सहारनपुर ऊ०प्र०

सारांश (Abstract)

वर्तमान डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है, और पुस्तकालय भी इससे अछूते नहीं हैं। पारंपरिक पुस्तकालयों से डिजिटल पुस्तकालयों की ओर बढ़ना न केवल सूचना की पहुँच को सरल बनाता है, बल्कि ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है । वर्तमान युग में टेक्नोलॉजी ने हर जगह अपनी जगह बना ली हैं | पुराने ज़माने की लाइब्रेरी, जहाँ धूल भरी किताबें और पसीने से तरबतर लाइब्रेरियन मिलते थे, अब धीरे-धीरे डिजिटल अवतार ले रही हैं। ये बदलाव सिर्फ जानकारी पाने को आसान नहीं बनाता, बल्कि ज्ञान को संभालने और ज्ञान के विस्तार के तरीके भी आज पूरी तरह बदल गये हैं |

इस रिसर्च पेपर में, लाइब्रेरी के डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन से जुड़े पहलुओं को सांझा किया गया है - जैसे ई-बुक्स, तीर्व जानकारी मिलना, ऑटोमेशन , लेकिन कठिनाइयाँ भी कम नहीं हैं - टेक्निकल सपोर्ट की कमी, स्टाफ को ट्रेनिंग देना, और पैसे की किल्लत, सब कुछ शामिल है । साथ ही, इसमें ये भी बताया गया है कि आगे कैसे डिजिटल लाइब्रेरी को और बेहतर बनाया जा सकता है - कुछ बढ़िया टिप्स और स्ट्रैटेजीज़ भी शामिल की गई हैं । प्रस्तुत रिसर्च पेपर उन सबके लिए काम की है जो लाइब्रेरी साइंस, इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट या एजुकेशनल सेक्टर में डिजिटल की ओर बढ़ रहे हैं - थोड़ी बहुत उलझनें हैं, लेकिन रास्ता भी दिखाया गया है ।

Keywords : (पुस्तकालय, सुचना एवं अनुसंधान, पारंपरिक पुस्तकालय, शोधकर्ता, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन, लाइब्रेरी साइंस, इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट, कार्यप्रणाली, ई-पुस्तकें, डिजिटल डेटाबेस और क्लाउड स्टोरेज, ई-बुक्स, ई-जर्नल्स, ऑडियोबुक्स, वीडियो लेक्चर्स, लाइब्रेरी मैनेजमेंट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स

---

1. भूमिका (Introduction)

पुस्तकालय सदैव से ज्ञान, सूचना और अनुसंधान का केंद्र रहे हैं। पारंपरिक पुस्तकालयों ने वर्षों तक पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचारपत्रों और अन्य मुद्रित संसाधनों के माध्यम से पाठकों और शोधकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा किया है । लेकिन 21वीं सदी के आरंभ से ही सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल मीडिया के तीव्र विकास ने पुस्तकालयों की संरचना, कार्यप्रणाली और सेवाओं में व्यापक परिवर्तन लाए हैं

। इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल तकनीक, ई-पुस्तकें, डिजिटल डेटाबेस और क्लाउड स्टोरेज जैसे साधनों के आगमन ने ज्ञान तक पहुँच को आसान, त्वरित और सुलभ बना दिया है ।

डिजिटल लाइब्रेरी ने तो सच में सीमाएँ ही तोड़ दी हैं। अब सिर्फ अपने मोहल्ले की लाइब्रेरी नहीं, बल्कि ग्लोबली इंफॉर्मेशन शेयर हो रही है । एजुकेशन हो, रिसर्च हो या फिर इंफॉर्मेशन संभालना - हर जगह डिजिटल लाइब्रेरी अपना इम्पैक्ट दिखा रही है । लेकिन, सच कहूँ तो, ये सब इतना भी आसान नहीं है । डिजिटल बदलाव से साथ-साथ ढेर सारी दिक्कतें भी आती हैं - टेक्निकल झंझट, सोशल प्रॉब्लम्स, एडमिनिस्ट्रेटिव सिरदर्द...सब कुछ पैकेज डील में मिलता है !

ये जो रिसर्च पेपर है, इसमें इन सब डिजिटल बदलावों की बारीकियाँ टटोली गई हैं - कौन-कौन से मौके मिल रहे हैं, क्या-क्या परेशानियाँ सामने आ रही हैं, और फ्यूचर में लाइब्रेरीज़ को क्या जुगाड़ अपनाने चाहिए । सीधा मतलब - पारंपरिक लाइब्रेरी का जमाना गया, अब डिजिटल दौर है, लेकिन इसके अपने फायदे - नुकसान दोनों हैं ।

2. डिजिटल बदलाव के मौके

जब से डिजिटल टेक्नोलॉजी चलन में आई है , तबसे लाइब्रेरी में की रूप रेखा को बदल के रख दिया है | अब किताबों की धूल झाड़ने का वो पुराना वक्त चला गया, सब कुछ ऑनलाइन स्क्रीन पर आ गया है । ये तो न सिर्फ़ इंफॉर्मेशन तक पहुंच को तेज़ और आसान बना रहा है, बल्कि सर्विस की गुणवत्ता , स्पीड, और यूज़र्स की खुशी को भी नया मुकाम दे रहा है । डिजिटल बदलाव ने लाइब्रेरी को निम्न चीज़ों के लिए यूज़र्स के समक्ष खोल के रख दिया है -

2.1 जल्द एवं हर जगह से पहुँच

डिजिटल लाइब्रेरी के विकास से आज के युग में सुचना एवं जानकारी प्राप्त करना बेहद सरल एवं सहज हो गया है | उपयोगकर्ता एक ही समय में विभिन्न स्थानों से सुचना प्राप्त कर सकते हैं | सुचना एवं जानकारी प्राप्त करने की गति को एक न्य आयाम मिला है | वर्तमान युग में सुचना मात्र एक क्लिक में सभी के लिए उपलब्ध है |

2.2 ई-संसाधनों की भरमार

डिजिटल लाइब्रेरी के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक संसाधन जैसे इलेक्ट्रॉनिक बुक्स, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल्स, इलेक्ट्रॉनिक ऑडियोबुक्स एवं वीडियो लेक्चर्स अब सबकुछ एक क्लिक पर उपलब्ध है । डिजिटल लाइब्रेरी की इन सभी जानकारी को प्राप्त करने के लिए बस इन्टरनेट का होना आवश्यक है | उपयोगकर्ता अपनी मन चाहि पुस्तक ई-बुक्स, ई-जर्नल्स, ऑडियोबुक्स, वीडियो लेक्चर्स अपने फ़ोन , लैपटॉप कहीं भी सिर्फ एक क्लिक में देख सकते हैं |

2.3 सेवाओं का ऑटोमेशन

LMS, RFID, OPAC, बारकोड स्कैनर जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी डिजिटल लाइब्रेरी मैनेजमेंट को सरल एवं सहज बना रही हैं या कहें तो स्मार्ट बना रही हैं साथ ही इनकी मदद से उपयोगकर्ताओं का समय भी

बच रहा हैं । लाइब्रेरी विभाग में काम करने वाले व्यक्तियों को बस अच्छी ट्रेनिग एवं समय के साथ – साथ नई टेक्नोलॉजी की जानकारी होना आवश्यक है |

2.4 डिजिटल प्रिज़र्वेशन

पुरानी पांडुलिपियां, ऐतिहासिक दस्तावेज़, और भी कई अन्य चीज़ों का अब डिजिटल वर्जन बन रहा है । इससे वो चीजें हमेशा के लिए सुरक्षित और सबके लिए उपलब्ध हो जाती हैं । ऑनलाइन उपलब्ध होने के कारण ये जानकारियाँ एक ही समय पे विभिन उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग की जा सकती हैं |

2.5 दूरस्थ शिक्षा का सपोर्ट

डिजिटल लाइब्रेरी और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स ने पढ़ने-लिखने का तरीका ही बदल दिया है । अब स्टूडेंट्स अपनी स्पीड और टाइम के हिसाब से पढ़ सकते हैं । वर्चुअल क्लासेस का मजा ही अलग है । वर्तमान युग में विभिन्न कॉलेज , कोचिंग क्लासेज एवं अन्य संस्थान अपने - अपने मोबाइल एप्लीकेशन बनकार पढाई को डिजिटल कर रहे हैं एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए भी शिक्षा को सुलभ बना रहे हैं |

2.6 ज़बरदस्त पैसे की बचत

लॉन्ग टर्म में डिजिटल रिसोर्सेज प्रिंटेड किताबों से सस्ते पड़ते हैं। स्टोरेज और मेंटेनेंस का खर्च भी कम हो जाता है । डिजिटल रिसोर्सेज को एक बार तैयार कर बार बार उपयोग में लाया जा सकता है एवं अनेक उपयोगकर्ताओं के साथ सांझा किया जास सकता है | जरुरत पड़ने पर प्रिंट भी किया जा सकता है |

2.7 पर्यावरण के लिए भी सही

पेपरलेस सर्विसेस मतलब पेड़ों की कटाई कम । लाइब्रेरी भी ग्रीन और सस्टेनेबल बन सकती है । ग्लोबल वॉर्मिंग का ज़माना है, और हम सबको मिलके आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए अपना योगदान देना है |

2.8 ग्लोबल नेटवर्किंग और पार्टनरशिप

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की वजह से अब लाइब्रेरीज इंटरनेशनल इंस्टीट्यूशन्स, रिसर्चर्स और यूजर्स से झट से कनेक्ट हो सकती हैं । नॉलेज शेयरिंग और रिसोर्स एक्सचेंज अब बाएं हाथ का खेल बन गया है | जानकारी सांझा करना आसान एवं सरल हो गया है |

3. बड़ी चुनौतियाँ

डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन सुनने में तो बड़ी बढ़िया चीज़ लगती है, पर इंडिया जैसे देश में ये रास्ता कांटों से भरा है । ढेर सारी टेक्निकल, फाइनेंशियल, और सोशल प्रॉब्लम्स भी आती हैं । डिजिटल होने के साथ साथ ही बड़ी चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है |

3.1 टेक्निकल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी

खासकर गांवों और छोटे शहरों की लाइब्रेरीज़ में कंप्यूटर, हाई-स्पीड इंटरनेट, सर्वर वगैरह की भारी किल्लत है । मतलब, डिजिटल लाइब्रेरी का सपना कई जगह बस सपना ही रह जाता है । डिजिटल लाइब्रेरी के उपयोग के लिए बेहतर इन्टरनेट कनेक्शन का होना बेहद आवश्यक है साथ ही साथ अच्छी गुणवत्ता के कंप्यूटर एवं अन्य उपकरण भी होना आवश्यक है |

3.2 पैसे की तंगी

डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के लिए लाइसेंस, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, स्टाफ ट्रेनिंग - सबमें पैसे लगते हैं । बिना बजट और बेहतर प्लानिंग के एक अच्छी डिजिटल लाइब्रेरी को स्थापित कर पाना बेहद कठिन कार्य है और हर कॉलेज या स्कूल के पास इतना बजट नहीं होता |

3.3 स्टाफ की ट्रेनिंग और स्किल्स की टेंशन

सीधी बात है - लाइब्रेरी वाले जितना भी चाहें, लेकिन नई डिजिटल चीजों (LMS वगैरह), डेटा मैनेजमेंट, या फिर साइबर सिक्योरिटी के बारे में ठीक से ट्रेनिंग नहीं मिलती । नतीजा ? सर्विस की क्वालिटी वैसे ही गड़बड़ हो जाती है । समय के साथ साथ नई टेक्नोलॉजी भी दस्तक दे रही हैं जिसकी पूर्ण जानकारी होना बेहद आवश्यक है | बिना जानकारी के स्टाफ अपने कार्य को सही ढंग से अंजाम नहीं दे सकते |

3.4 डिजिटल गैप - गाँव और शहर का फर्क

ग्रामीण और कमजोर तबकों तक इंटरनेट या बढ़िया डिजिटल डिवाइस पहुँच ही नहीं पाते । तो ऐसे में सबको बराबर डिजिटल सर्विस मिले, ऐसा सोचना सपना ही है । आज भी हमारे देश के कई वर्ग ऐसे हैं जो बेहतर बिजली की सुविधा से अछूते हैं जहाँ बिजली के आभाव में पढ़ पाना बेहद कठिन है ऐसे में डिजिटल लाइब्रेरी की पहुच को ऐसे तबके में पहुचना नामुमकिन सा है |

3.5 साइबर सिक्योरिटी और प्राइवेसी का झंझट

डिजिटल लाइब्रेरी में यूज़र डेटा, ई-रिसोर्सेस सब कुछ खतरे में रहता है । ऊपर से कॉपीराइट की दिक्कतें भी अलग सिरदर्द हैं । आजकल साइबर फ्रॉड की समस्या जटिल होती जा रही है | साइबर फ्रॉड की समस्य से निपटने के लिए बेहतर समाधान ढूँढने की आवश्यकता है |

3.6 कॉपीराइट और लाइसेंसिंग की उलझन

डिजिटल कंटेंट शेयर करने के लिए पहले तो 100 तरह के क़ानूनी रास्तों से होकर गुजरना पड़ता है और लाइसेंसिंग लेनी पड़ती है । ये काम न सिर्फ़ पेचीदा है, बल्कि जेब भी ढीली करवा देता है।

3.7 यूज़र्स की अनभिज्ञता

सच कहूँ तो, बहुत से लोग जानते ही नहीं डिजिटल लाइब्रेरी या उसके टूल्स का सही इस्तेमाल कैसे किया जाए । नतीजा उनकी भागीदारी वैसे ही लिमिटेड रह जाती है । लाइब्रेरी टूल्स के उपयोग एवं उनका सही इस्तेमाल की जानकारी उपयोगकर्ताओं तक पहुचना बेहद आवश्यक है |

3.8 भाषा की दीवार

लगभग सारी डिजिटल चीज़ें इंग्लिश में ही मिलती हैं । अब जो लोग अंग्रेज़ी नहीं जानते, उनके लिए तो ये किसी पहेली से कम नहीं । अंग्रेजी भाषा की शिक्षा लाइब्रेरी के हर कर्मचारी एवं उपयोगकर्ताओं को भी होना आवश्यक है | जिससे वे लाइब्रेरी का सही ढंग से उपयोग कर पाएं |

4. भविष्य की राह (The Way Forward)

डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन का खेल सिर्फ मशीनें लगाने या सॉफ्टवेयर खरीदने से नहीं चलता । असलियत ये है कि लंबी दौड़ वाला, सबको साथ लेकर चलने वाला नजरिया चाहिए - वो भी खासकर अपने इंडिया जैसे देश में, जहां हर शहर, हर गली का लाइब्रेरी कल्चर अलग है । तो चलो, कुछ काम की बातें करें, जो सच में असर डाल सकती हैं:

4.1 सॉलिड डिजिटल पॉलिसी और प्लानिंग

सरकार हो या कोई इंस्टिट्यूशन - डिजिटलीकरण के लिए सीधा-साफ रोडमैप चाहिए । गोल सेट करो, बजट फिक्स करो, और फिर उस पर अमल करने की ठोस प्लानिंग बनाओ । वैसे, एक नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी मिशन का सपना तो अब हकीकत बनना ही चाहिए, कब तक बस बातें करेंगे ?

4.2 स्टाफ की ट्रेनिंग और स्किल्स

मशीनें तो ठीक हैं, लेकिन लोग अगर अपडेटेड नहीं होंगे तो सिस्टम धरा-का-धरा रह जाएगा । रेगुलर ट्रेनिंग दो - चाहे आईटी हो, सॉफ्टवेयर हो, या डिजिटल लिटरेसी । स्टाफ जितना स्मार्ट, उतनी बिंदास सर्विस !

4.3 पैसे का सपोर्ट और इन्वेस्टमेंट

सिर्फ सरकारी ग्रांट के भरोसे मत बैठो । राज्य सरकार, कॉलेज, प्राइवेट कंपनियाँ, सबको इन्वॉल्व करो । CSR का पैसा ले आओ, PPP मॉडल ट्राय करो - जो भी हो, लाइब्रेरी को डिजिटल बनाने के लिए पैसे ना रुके ।

4.4 ओपन एक्सेस को बढ़ावा

रिसर्च पेपर, थीसिस, एजुकेशनल वीडियो - ये सब ओपन एक्सेस प्लेटफॉर्म पर डालो । जितना नॉलेज खुलेगा, उतना एजुकेशन डेमोक्रेटिक बनेगा । गेटकीपिंग का जमाना गया, भाई!

4.5 भाषाओं की इज्जत

हर चीज़ सिर्फ अंग्रेज़ी या हिंदी में क्यों? डिजिटल कंटेंट को लोकल लैंग्वेज में भी बनाओ, वरना गाँव-देहात के लोग हमेशा आउटसाइडर ही रहेंगे।

4.6 डिजिटल लिटरेसी कैंपेन

यूजर्स को भी तो समझाओ कि ये डिजिटल लाइब्रेरी आखिर है क्या ? वर्कशॉप्स, ट्रेनिंग, अवेयरनेस ड्राइव - जो भी काम आए, सब आज़माओ । नहीं तो सब सिस्टम पड़े रहेंगे, धूल खाते हुए ।

4.7 टीम वर्क और नेटवर्किंग

यूनिवर्सिटी, रिसर्च इंस्टीट्यूट, लाइब्रेरी, टेक कंपनी - इन सबको एक साथ जोड़ो । जितना बड़ा नेटवर्क, उतना स्ट्रॉन्ग डिजिटल प्लेटफॉर्म । अकेले-अकेले खेलने का टाइम गया ।

4.8 डिजिटल सिक्योरिटी

भरोसा करो, बिना सिक्योरिटी के तो सब खतरे में है ! डेटा को संभालो, पासवर्ड्स स्ट्रॉन्ग रखो, एन्क्रिप्शन और बैकअप जैसे बेसिक काम तो करो ही करो। वरना एक हैकर आया, और सब गड़बड़ !

असल में, डिजिटल लाइब्रेरी का फ्यूचर तो बहुत मजेदार है - बस सही सोच, सही टीम, और थोड़ी स्मार्ट प्लानिंग चाहिए। बाक़ी, जुगाड़ इंडिया में कभी खत्म नहीं होता !

5. निष्कर्ष (Conclusion)

पुस्तकालयों में डिजिटल परिवर्तन न केवल समय की आवश्यकता है, बल्कि यह ज्ञान-संपदा तक पहुँच को व्यापक, सुलभ और समावेशी बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम भी है। सूचना प्रौद्योगिकी के समावेश ने पारंपरिक पुस्तकालयों की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है - जहाँ अब केवल पुस्तक भंडारण नहीं, बल्कि डिजिटल ज्ञान वितरण, सूचना प्रबंधन और नवाचार का केंद्र बन चुका है।

हालाँकि इस परिवर्तन की राह में तकनीकी, आर्थिक, संरचनात्मक और सामाजिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी यह स्पष्ट है कि डिजिटल रूपांतरण से पुस्तकालयों की पहुँच, कार्यक्षमता और प्रभावशीलता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। सफल डिजिटल परिवर्तन के लिए केवल तकनीकी अधोसंरचना ही नहीं, बल्कि नीति-निर्माण, मानव संसाधन विकास, वित्तीय समर्थन और उपयोगकर्ता सहभागिता की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भविष्य में, यदि पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं की बदलती सूचना आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करते हैं, तो वे न केवल ज्ञान के संवाहक रहेंगे, बल्कि सामाजिक प्रगति, शिक्षा और अनुसंधान के सशक्त संवर्धक भी सिद्ध होंगे।

6. संदर्भ (References)

1. गुप्ता, एस. (2020). डिजिटल पुस्तकालय: एक मॉडर्न नजरिया. नई दिल्ली: ज्ञान गंगा पब्लिकेशंस।
2. शर्मा, आर. (2021). लाइब्रेरी साइंस में आईसीटी का इस्तेमाल. वाराणसी: भारत प्रकाशन।
3. मिश्रा, ए. (2019). "भारत में डिजिटल लाइब्रेरीज़ की भूमिका". भारतीय पुस्तकालय विज्ञान जर्नल, 45(3), 112 - 120।

4. Singh, J., & Verma, P. (2020). "Digital Transformation in Libraries: Opportunities and Challenges". International Journal of Library and Information Science, 12(1), 45–53.
5. UNESCO. (2018). Guidelines for Digital Libraries. देखा जा सकता है: https://unesdoc.unesco.org
6. Digital Library of India. (n.d.). About the Project. ये भी देख लें: https://www.dli.gov.in
7. Khan, A. & Fatima, N. (2017). "Emerging Trends in Digital Libraries". Library Herald, 55(2), 89–96.
8. National Digital Library of India (NDLI). (2021). Overview and Mission. लिंक है: https://ndl.iitkgp.ac.in
9. चौधरी, एम. (2022). लाइब्रेरीज़ में सूचना टेक्नोलॉजी का असर. भोपाल: सहारा पब्लिकेशन।
10. IFLA (International Federation of Library Associations and Institutions). (2019). Digital Libraries: Principles and Best Practices. मिल जाएगा: https://www.ifla.org